राष्ट्रीय संगोष्ठी दिनांक 2-3 अक्टूबर, 2023

ज्ञान, शांति, मैत्री एवं गांधी

संगोष्ठी के बारे में

समकालीन वैश्विक परिदृश्य में ज्ञान, शांति और मैत्री पदों की महत्ता असंदिग्ध है। पिछली चार शताब्दियों के मनुष्य का इतिहास इन्हीं शब्दों के इर्द गिर्द का इतिहास है। नवजागरण के बाद से ज्ञान के चरित्र और आशय में आमूल परिवर्तन हुआ है। इस परिवर्तन ने जहाँ मनुष्य को केन्द्रीयता दी, वहीं इसके अनुत्पादक प्रसंगों ने मनुष्यता को बुरी तरह प्रभावित भी किया। इतिहास गवाह है कि ‘ज्ञान’ के इस केन्द्रीयतावादी और वर्चस्वशाली स्वरूप ने कई बार ‘शांति’ और ‘मैत्री’ के मूल आशय और मंतव्यों को भी अस्पष्ट और धुँधला किया है।

लेकिन इतिहास की सकारात्मक समझ हमें यह भी बताती है कि 20 वीं शताब्दी में महात्मा गांधी जैसे दार्शनिक विचारक और कर्मयोगी भी हुए, जिन्होंने इन पदों को नये सिरे से मनुष्यता के लिये व्याख्यायित किया। तथाकथित वर्चस्वशाली ‘ज्ञान’ के चमकदार उत्पाद के रूप में इतराती, इठलाती ‘सभ्यता’ को उन्होंने जैसे आईना दिखायाऔर अपने सहज, सरल चिंतन के द्वारा जैसे एक वैकल्पिक सभ्यता की अवधारणा रखी। ‘हिंसा’ को सभ्यता के विकास और अस्तित्व के लिये आवश्यक मानने वाले विचारों को प्रस्थापित कर के उन्होंने सहयोग, सामंजस्य, सहकार और प्रेम के बुनियाद पर सभ्यता को समझने की स्थापना दी और यह समूची दुनिया ने देखा कि गांधी विचार की रोशनी में इन पदों ने नई अर्थवत्ता और आशय प्राप्त किये।

इस संगोष्ठी का उद्देश्य हमारे समय की ज्ञान मीमांसा को केंद्र मे रख कर इसके स्वरूप, विस्तार और प्रभाव की विवेचना करना, ज्ञान और सत्ता के अन्तः संबंधों की रोशनी में आए परिवर्तनों को गांधी जी के ज्ञान बोध की अवधारणा के माध्यम से समझने का प्रयास करना, शांति को केंद्र मे रखकर इसके विशद स्वरूप, प्रभाव, आवश्यकता, इसकी विडंबनाओं, चुनौतियों और समाधान के आयामों पर परिचर्चा करना तथा अद्वैत पर आधारित गांधी जी के चिंतन में मैत्री के महत्व को समझना है।

मुख्य विषय :

ज्ञान, शांति, मैत्री और गांधी

उप-विषय

1. सामाजिक न्याय : गांधी एवं अंबेडकर की दृष्टि
2. स्वतंत्रता संग्राम की मुख्य प्रवृत्तियाँ एवं गांधी
3. स्त्री चेतना एवं गांधी
4. रचनात्मक कार्यक्रम और उनके आयाम
5. सामाजिक सुरक्षा और गांधी
6. ग्रामोद्योग एवं खादी
7. ग्राम-स्वराज एवं आत्मनिर्भरता
8. जीवन शैली, आरोग्य एवं गांधी
9. गांधी का परिस्थितिकीय चिंतन
10. गांधी की भाषा नीति
11. सनातन और गांधी
12. राष्ट्रवाद और गांधी
13. गांधी, सिनेमा और मीडिया
14. गांधी के बाद गांधीवाद
15. गांधी की इतिहास दृष्टि
16. गांधी की वैश्विक विरासत
17. पुरुषार्थ एवं गांधी
18. भारतीय ज्ञान परंपरा और गांधी
19. गांधी एवं आदिवासी समाज
20. अंतर्राष्ट्रीय शांति व्यवस्था के लिए गांधी की दृष्टि
21. विश्व बंधुत्व की गांधीवादी अवधारणा
22. भारतीय डायस्पोरा और गांधी
23. भारतीय दर्शन और गांधी
24. गांधी और उनके समकालीन
25. कला, साहित्य और गांधी

- **संगोष्ठी शोध-सार प्राप्ति की अंतिम तिथि : 25 सितंबर , 2023**
- **संगोष्ठी शोध-पत्र प्राप्ति की अंतिम तिथि : 28 सितंबर , 2023**
- पंजीकरण लिंक https://forms.gle/n2ebWuCGvkATewai9
- **संगोष्ठी-पत्र संप्रेषण हेतु ई-मेल : seminargps23@gmail.com**
- **हिंदी में युनिकोड (Kokila Font 12)**
- **अग्रेजी में Times New Roman(Font 12, Space 1.5 cm)**
- **पंजीकरण शुल्क विवरण:**

शिक्षक – 1500/-
शोधार्थी – 500/-
विद्यार्थी – नि:शुल्क

UPI ID : 8318331412@ybl

Scan & Pay

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविलय, वर्धा

मध्य भारत के सतपुड़ा रेंज की पहाड़ियों पर अवस्थित महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय गांधी के सपनों का भारत की तरह भारत के सपनों का विश्वविद्यालय है। महात्मा गांधी के सपनों के भारत में एक सपना राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी को प्रतिष्ठित करने का भी था। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के उद्गम से उद्गमित नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन (10-14 जनवरी, 1975) में यह प्रस्ताव पारित किया गया था कि संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में स्थान दिया जाए तथा एक अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना की जाय जिसका मुख्यालय वर्धा में हो। यह संभव हुआ वर्ष 1997 में – जब भारत की संसद द्वारा एक अधिनियम पारित करके महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना वर्धा में हुई। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय अपने स्वरूप में एक अनूठा विश्वविद्यालय है। हिंदी के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से कार्यरत यह दुनिया में अकेला विश्वविद्यालय है जहाँ फ्रेंच,चीनी, स्पेनिश और जापानी जैसी विदेशी भाषाएं हिंदी माध्यम से पढ़ाई जाती हैं। ‘ग्लोबलहिंदी’ की राह पर यह मील का पत्थर है। विश्वविद्यालय की कार्य-संस्कृति, प्रशासन व कार्य-व्यवहार में गांधी के विचार मार्गदर्शन का कार्य करते हैं। ज्ञान-विज्ञान की एक संवाहक भाषा के रूप में हिंदी केंद्र-बिंदु बने, विश्वविद्यालय इस महत्वाकांक्षी योजना की सफलता हेतु कटिबध्द है।

गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग

गांधी एवं शांति अध्ययन सामाजिक विज्ञानों के अध्ययन के क्षेत्र में एक प्रभावशाली कदम है। यह विषय गांधी की अवधारणा और शांति से इसकी संबद्धता को व्यापक दायरे में समझने की एक दृष्टि देता है। अंतरानुशासनिक चरित्र का यह पाठ्यक्रम नैतिक-दष्टि, सुशासन, विकेन्द्रीकरण, प्राकृतिक संसाधनों का सरंक्षण एवं इसकी राजनीति के साथ-साथ भू-राजनीति एवं सतत विकास की शिक्षा को अपने में शामिल करता है। यह विषय विद्यार्थी को सतत विकास एवं शांति के साथ उसकी संबद्धता को शिक्षण, शोध एवं विस्तार के व्यापक कार्यक्रमों तक पहुँचाता है। गांधी एवं शांति के विभिन्न पहलुओं को व्यापक-दृष्टि से व्याख्यायित करने वाला यह पाठ्यक्रम न सिर्फ विद्यार्थियों के कौशल एवं क्षमता निर्माण में वृध्दि करता है, बल्कि उन्हें विकास एवं शांति के क्षेत्र में आनेवाली समस्याओं और चुनौतियों को समाधान के लिये प्रेरित भी करता है। गांधी के मूल्यों एवं सिध्दांतों के प्रति गंभीर अध्ययन व शोध के साथ-साथ मानवता के लिए प्रतिबध्दता पैदा करने के उद्देश्य से यह पाठ्यक्रम सन् 2004 से संचालित किया गया है। अंतरानुशासनिक पध्दति से तैयार यह पाठ्यक्रम संपूर्ण मानविकी एवं समाज वैज्ञानिक अध्ययन का ऐसा सम्मिलित अध्ययन प्रस्तुत करता है, जो विभिन्न ज्ञानानुशासनों को देखने व समझने की नई दृष्टि देता है।

संरक्षक

प्रो. एल. कारुण्यकरा

कुलपति: म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

आयोजन समिति

संयोजक

डॉ. राकेश कुमार मिश्र (मो. 9970251140)

विभागाध्यक्ष: गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग,
संस्कृति विद्यापीठ, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

सह-संयोजक

डॉ. मनोज कुमार राय (मो. 9404822608)

संयोजक मंडल

डॉ. चित्रा माली
डॉ. अमित राय
डॉ. जयंत उपाध्याय
डॉ. शंभू जोशी
डॉ. किरण कुंभरे
डॉ. राकेश

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
MAHATMA GANDHI ANTARRASHTRIYA HINDI VISHWA VIDYALAYA, WARDHA
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

कार्यक्रम-विवरण

प्रथम दिवस : 2 अक्तूबर, 2023

ग़ालिब सभागार, तुलसी भवन, साहित्य विद्यापीठ

जलपान एवं पंजीकरण : 10.30 बजे

उद्घाटन सत्र : प्रात: 11.30 – 01.30 बजे
भोजन अवकाश : 01.30 – 02.15 बजे

प्रथम अकादमिक सत्र : 2.15 – 4.15 बजे
ज्ञान: परम्परा, सहजबोध और राजनीति (गांधी दृष्टि)
चाय अन्तराल : 4.15 – 4.30 बजे तक

द्वितीय अकादमिक सत्र : 04.30 – 06.15 बजे
शांति एवं सामाजिक न्याय: आवश्यकता, चुनौतियाँ और समाधान
अल्पाहार एवं चाय 06.15 - 06.30 बजे तक

द्वितीय दिवस : 3 अक्तूबर, 2023

ग़ालिब सभागार, तुलसी भवन, साहित्य विद्यापीठ
जलपान : 09.30 – 09.45 बजे

तृतीय अकादमिक सत्र 09.45 - 11.30 बजे
मैत्री की अवधारणा और इसकी व्याप्ति: व्यष्टि से समष्टि तक
चाय अन्तराल : 11.30 - 11.45 बजे

चतुर्थ अकादमिक सत्र : 11.45 - 01.30 बजे
सामाजिक सौहार्द और इसका तानाबाना: कला साहित्य और सौंदर्य का गांधीवादी दर्शन
भोजन अवकाश : 01.30 – 02.15 बजे

पंचम अकादमिक सत्र 2. 30 – 4. 30 बजे
गांधी दर्शन को ज्ञान में बदलने की चुनौतियाँ और उच्च शिक्षा में गांधी अध्ययन
चाय अन्तराल : 4. 30 – 4. 45 बजे तक

संपूर्ति सत्र : 4. 45 - 06.00 बजे

ज्ञान शांति मैत्री

1997 25 2022

आज़ादी का अमृत महोत्सव

राष्ट्रीय संगोष्ठी

विश्वविद्यालय के रजत जयंती वर्ष में गांधी जयंती के अवसर पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी

मुख्य विषय : ज्ञान, शांति, मैत्री और गांधी

2-3 अक्टूबर, 2023

आयोजक

गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

गांधी हिल्स, वर्धा - 442 001 (महाराष्ट्र)
दूरभाष: 07152- 230313 /मो. 9970251140
Email: seminargps23@gmail.com
वेबसाइट : www.hindivishwa.org